कथा सरिता

क्या भगवान हमें देख रहा है?

हमारे घर के पास एक डेरी वाला है। वह डेरी वाला ऐसा है कि आधा किलो घी में अगर घी 502 ग्राम तुल गया तो 2 ग्राम घी निकाल लेता था। एक बार मैं आधा किलो घी लेने गया। उसने मुझे 90 रुपये ज़्यादा दे दिये। मैंने कुछ देर सोचा और पैसे लेकर निकल लिया। मैंने मन में सोचा कि 2-2 ग्राम से तूने जितना बचाया था बच्चू, अब एक ही दिन में निकल गया।

मैंने घर आकर अपनी गृहलक्ष्मी को कुछ नहीं बताया और घी दे दिया। उसने जैसे ही घी डिब्बे में पलटा आधा घी बिखर गया, मुझे झट से 'बेटा चोरी का माल मोरी में' वाली कहावत याद आ गयी और साहब यकीन मानिये वो घी किचन की सिंक में ही गिरा था। इस वाक्य को कई महीने बीत गये थे। परसो शाम को मैं वेज रोल लेने गया, उसने भी मुझे सत्तर रुपये ज़्यादा दे दिये, मैंने मन ही मन सोचा, चलो बेटा आज फिर चेक करते हैं कि क्या वाकई भवगान हमें देखता है! मैंने रोल पैक कराये और पैसे लेकर निकल लिया।

आश्चर्य तब हुआ जब एक रोल अचानक रास्ते में ही गिर गया, घर पहुँचा, बचा हुआ रोल टेबल पर रखा, जूस निकालने के लिए अपना मनपंसद काँच का गिलास उठाया, अरे यह क्या गिलास हाथ से फिसल कर टूट गया। मैंने हिसाब लगया, करीब-करीब सत्तर में से साठ रुपये का नुकसान हो चुका था। मैं बड़ा आश्चर्यचकित था। और अब सुनिये, ये भगवान तो मेरे पीछे ही पड़ गया, जब कल शाम को सुभिक्षा वाले ने मुझे तीस रुपये ज़्यादा दे दिये। मैंने अपनी धर्म-पत्नी से पूछा क्या कहती हो एक ट्राई और मारें? उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा जी नहीं, और हमने पैसे वापस कर दिये। बाहर आकर हमारी धर्म-पत्नी जी ने कहा वैसे एक ट्राई और मारनी चाहिए थी। कहना ही था कि उन्हें एक ठोकर लगी और वह गिरते-गिरते बचीं। मैं सोच में पड़ गया कि क्या वाकई भगवान हमें देख रहा है! हाँ भगवान हमें देख रहा है, हम बहुत सी जगह पोस्टर लगे देखते हैं, आप कैमरे की नज़र में हैं। पर याद रखना हम हर क्षण, पल, प्रतिपल उसकी नजर में हैं। वो हर पल गलत कार्य करने से पहले और बाद में भी हमें आगाह करता है। लेकिन यह समझना, न समझना हमारे विवेक पर निर्भर करता है।

पेट भरता ही नहीं....!

किसी राजा के पास एक बकरा था। एक बार उसने ऐलान किया कि जो कोई इस बकरे को जंगल में चराकर तृप्त करेगा, मैं उसे आधा राज्य दे दूंगा। किंतु बकरे का पेट पूरा भरा है या नहीं इसकी परीक्षा मैं खुद करूंगा। इस ऐलान को सुनकर एक मनुष्य राजा के पास आकर कहने लगा कि बकरा चराना कोई बड़ी बात नहीं है।

वह बकरे को लेकर जंगल में गया और सारे दिन उसे घास चराता रहा, शाम तक उसने बकरे को खूब घास खिलाई और फिर सोचा कि सारे दिन इसने इतनी घास खाई है, अब तो इसका पेट भर गया होगा तो अब इसको राजा के पास ले चलूँ। बकरे के साथ वह राजा के पास गया, राजा ने थोड़ी सी हरी घास बकरे के सामने रखी तो बकरा उसे खाने लगा। इस पर राजा ने उस मनुष्य से कहा कि तूने उसे पेट भर खिलाया ही नहीं वर्ना वह घास क्यों खाने लगता।

बहुत लोगों ने बकरे का पेट भरने का प्रयत्न किया किंतु ज्यों ही दरबार में उसके सामने घास डाली जाती तो वह फिर से खाने लगता। एक विद्वान ब्राह्मण ने सोचा कि इस ऐलान का कोई तो रहस्य है, तत्व है, मैं युक्ति से काम लूंगा। वह बकरे को चराने के लिए ले गया। जब भी बकरा घास खाने के लिए जाता तो वह उसे लकड़ी से मारता, सारे दिन में ऐसा कई बार हुआ।

अंत में बकरे ने सोचा कि यदि मैं घास खाने का प्रयत्न करूंगा, तो मार खानी पड़ेगी। शाम को वह ब्राह्मण बकरे को लेकर राजदरबार में लौटा। बकरे को तो उसने बिल्कुल घास नहीं खिलाई थी, फिर भी राजा से कहा मैंने इसको भरपेट खिलाया है। अतः यह अब बिल्कुल घास नहीं खायेगा, लो कर लीजिये परीक्षा। राजा ने घास डाली लेकिन उस बकरे ने उसे खाया तो क्या, देखा या सूंघा तक नहीं। बकरे के मन में यह बात बैठ गयी थी कि अगर घास खाऊंगा तो मार पड़ेगी।

अतः उसने घास नहीं खाई। मित्रों, यह बकरा हमारा मन ही है और बकरे को घास चराने ले जाने वाला ब्राह्मण आत्मा है। राजा परमात्मा है। मन को मारो नहीं, मन पर अंकुश रखो। मन सुधरेगा तो जीवन भी सुधरेगा।

अतः मन को विवेक रूपी लकड़ी से रोज़ पीटो। कमाई छोटी या बड़ी हो सकती है। पर रोटी की साइज़ लगभग सब घर में एक जैसी ही होती है। बहुत सुन्दर सन्देश अगर आप किसी को छोटा देख रहे हो, तो आप उसे या तो दूर से देख रहे हो, या अपने गुरूर से देख रहे हो।

बदलें समय के साथ

रेगिस्तान के बीच बसे एक शहर में फलों की बहुत कमी थी। भगवान ने अपने दूत को भेजा कि जाओ और लोगों से कह दो कि हो सके तो वो एक दिन में बस एक ही फल खाएं। सभी लोग ऐसा ही करने लगे।

पीढ़ी दर पीढ़ी ऐसा ही होता चला आया और वहाँ का पर्यावरण संरक्षित हो गया। चूंकि बचे हुए फलों के बीजों से और भी पेड़ निकल आते, कुछ दशकों में ही पूरा शहर हरा-भरा हो गया। अब वहाँ फलों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन अभी भी लोग एक दिन में बस एक ही फल खाने का पुराना रिवाज़ मानते थे। वे अपने पुर्वजों द्वारा दी गयी नसीहत के प्रति अभी भी वफादार थे। दूसरे शहर वाले उनसे बचे हुए फलों को देने का आग्रह करते, पर उन्हें लौटा दिया जाता। नतीजन टनों-टन फल बर्बाद हो जाते और सड़कों पर इधर-उधर बिखरे पड़े रहते।

भगवान ने एक और दूत को बुलाया और कहा, जाओ नगर वासियों से कह दो कि वो अब जितना चाहें उतने फल खायें और बचे हुए फलों को बाकी शहरों को दे दें। दूत यही सन्देश लेकर शहर पहुंचा, लेकिन उसे पत्थरों से मारा गया और शहर से दूर भगा दिया गया। लोगों के दिलों-दिमाग में पुरानी बात इतनी बैठ चुकी थी कि उससे अलग वो किसी भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं थे। पर समय के साथ कुछ युवा सोच वाले लोग पुराने रिवाजों के खिलाफ आवाज़ उठाने लगे, लेकिन इतनी पुरानी परंपरा को छोड़ना आसान न था इसलिए इन लोगों ने अपना धर्म ही छोड़ दिया और बचे हुए फलों को दूसरों में बांटने लगे। कुछ सालों में बस वो ही लोग धर्म को मानने वाले बचे जो खुद को संत मानते थे लेकिन हकीकत में वे ये नहीं देख पा रहे थे कि दुनिया कैसे बदलती है और कैसे खुद को समय के साथ बदल लेना चाहिए।

अमेरिका-सिलिकॉन वैली। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सैन्टा क्लारा कन्वेन्शन सेंटर में इंडिया पोस्ट तथा सिलिकॉन वैली की अन्य संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय 'इंडो-अमेरिकन वेलनेस कन्क्लेव एंड एक्ज़ीविशन' में शरीक हुए काउंसिल जनरल वेंकटेशन अशोक,सैन फ्रान्सिसको काउंसलेट, ब्र.कु. कुसुम,डायरेक्टर,ब्रह्माकुमारीज़,सिलिकॉन वैली, ऐश कालरा,एसेम्बली मेम्बर तथा राजनीति एवं अन्य संस्थाओं से जुड़े गणमान्य लोग।

बरेली-सिविल लाइन्स (उ.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए रेलवे मजिस्ट्रेट सुशील कुमार, टाइम्स ऑफ इंडिया की ज़ोनल हेड आरोही शर्मा, ब्र.कु. नीता, डॉ. अतुल कुमार वर्मा, गोपाल अग्रवाल तथा अन्य।

औरैया-उ.प्र.। गेल गांव दिबियापुर में गेल परिवार के साथ योग दिवस कार्यक्रम के पश्चात् एम.वी. रवि सोम स्वरूडु,कार्यकारी निदेशक,गेल इंडिया लि.,पाता ब.कु. कृष्णा तथा ब्र.कु. रिया को मोमेन्टो भेंट कर सम्मानित करते हुए।

भदोही-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए विधायक रविन्द्र नाथ त्रिपाठी। साथ हैं जिलाधिकारी राजेन्द्र प्रसाद, मुख्य विकास अधिकारी हरि शंकर सिंह, उप जिलाधिकारी, ब्र.कु. विजयलक्ष्मी तथा ब्र.कु. ब्रजेश।

भरतपुर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ की सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा एस.पी. ऑफिस में 'तनाव मुक्त जीवन' विषय पर आयोजित सेमिनार में तनाव मुक्ति के टिप्स देते हुए राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. संजीव। कार्यक्रम में शरीक हुए एडिशनल एस.पी. सुरेश खींची, ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. जयश्री,दिल्ली, डेप्युटी एस.पी. आवर्धन रत्नू तथा अन्य अधिकारी गण।

चीन-ग्वांगझोउ। चाइना-इंडिया कल्चरल एक्सचेंज सेंटर तथा काउंसलेट जनरल ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराने के पश्चात् मंच पर ब्र.कु. सपना, सिटी मेयर तथा अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं अधिकारीगण।

गोपालगंज-बिहार। योग दिवस के अवसर पर जेल में आयोजित योग प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित हैं जेल सुपरिन्टेंडेंट संदीप कुमार, ब्र.कु. अंगूर, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. राज किशोर तथा योगाभ्यास करते हुए कैदी भाई।